मर्यादा के बिना उच्छश्रृंखलता पनपती है

- आचार्य महाप्रज्ञ

बीदासर, 25 मार्च।

आचार्यप्रवर हाजरी वाचन के अवसर पर धर्मसभा को संबोधित कराते हुए फरमाया कि हाजरी का मतलब है याद करा देना कि जो मर्यादाएं है उनके प्रति हमारी जागरूकता रहे। मर्यादा, अनुशासन ये जीवन के विकास का सर्वोत्तम एक साधन है। जहां कोई अनुशासन नहीं, मर्यादा नहीं होती वहां उच्छश्रृंखलता पनपती है। परिवार में भी मर्यादा आवश्यक है।

आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा कि तेरापंथ के साधु-साध्वियों में मर्यादा के प्रति आस्था है, क्योंकि मर्यादा के बिना विकास नहीं हो सकता।

युवाचार्यप्रवर ने मर्यादा पत्र की व्याख्या करवाते हुए मर्यादाओं का पुनरावर्तन करवाया।

इस अवसर पर आचार्य प्रवर एवं युवाचार्य प्रवर ने मुनि जिनभक्त (चेन्नई) के स्वर्गासपरांत उनके जीवन प्रसंगों की चर्चा करते हुए चार लोगस्स का ध्यान करवाया।

दुआ और दवा का सफल उपक्रम

बीदासर, 25 मार्च।

स्थानीय मातुश्री छोगांजी स्मारक स्थल भवन के अणुव्रत रोग निदान केन्द्र में भारतीय सेवा समाज राजस्थान, डालमिया सेवा ट्रस्ट दिल्ली एवं स्वर्गीय पिता मेघराज एवं माता जेठीदेवी की पुण्य स्मृति में चोथमल बोथरा द्वारा आयोजित दमा-मधुमेह तथा गठिया निरोधक शिविर के उद्घाटन के अवसर पर अपने सम्बोधन में अणुव्रत प्रभारी मुनिश्री सुखलाल ने कहा - बीमारी पहले मनुष्य के मन में पैदा होती है, फिर वह शरीर में फैलती है। इसलिए शारीरिक उपचार के साथ-साथ मानसिक स्वस्थता को जोड़ा जाए यह जरूरी है। हमारे यहां उपचार के दो-तरीके बतलाए गए हैं। एक दवा और दूसरा हुआ। यह प्रसन्नता की बात है कि भारतीय सेवा समाज एवं अणुव्रत समिति इन दोनों उपायों पर काम रही है।

इस अवसर पर भारतीय सेवा समाज राजस्थान के मंत्री पृथ्वीराज रतनू ने बताया कि स्वामी श्रीऔष्णानन्दजी सरस्वती की प्रेरणा से देश-विदेश में हजारों-हजारों लोगों को स्वस्थ बनाने के लिए शिविर लगाए जाते हैं।

शिविर में डॉ आदिल गौरी एवं डॉक्टर चेतन शर्मा ने अपनी सेवाएं प्रदान की। इस अवसर पर मुनि अशोक कुमार, चुरू जिला अणुव्रत समिति के अध्यक्ष चोथमल बोथरा, गोपाल भोभरिया, किशनदान चारण आदि विशिष्ट महानुभाव उपस्थित थे। कस्बे के अनेक लोगों से इस शिविर का लाभ उठाया। शिविर में पूनमचन्द रेगर, संपतमल बैंगानी, रणजीतसिंह मील, रणवीरसिंह गढवाल, सुमेरसिंह राठौड़, प्रहलादसिंह शेखावत आदि ने अपनी सेवाएं दी।

शिविर में रोगी ..... लाभान्वित हुए।

नवपद आराधना अनुष्ठान शिविर 27 मार्च से प्रारंभ

बीदासर, 25 मार्च।

आचार्य महाप्रज्ञ एवं युवाचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में तथा प्रेक्षाप्राध्यापक मुनि किशनलाल के निर्देशन में नमस्कार महामंत्र का अनुष्ठान 27 मार्च से प्रारंभ होकर 3 अप्रैल, 2009 तक चलेगा। इस अनुष्ठान के बारे में मुनि किशनलाल ने बताया कि दुनिया में शक्ति का महत्त्व है। शक्तिहीन व्यक्ति अपने आप में रिक्तता का अनुभव करता है। कभी-कभी शक्तिविहीन मनुष्य अपने आपको दयनीय और असहाय अनुभव करता है। सबसे बड़ी शक्ति आध्यात्मिक की शक्ति होती है। अन्य शक्तियों का अपना-अपना महत्त्व होता है। जैन धर्म में नमस्कार महामंत्र का अमोध शक्ति के रूप में माना है। आगम में मंत्र को चौदह पूर्व का सार कहा गया है। नमस्कार महामंत्र को मंत्र शास्त्र में सव्वपाव पणासणो। समस्त पाप क्लेश को नाश करने वाला बताया है। मुनि ने बताया कि जो व्यक्ति नवपद आराधना अनुष्ठान में भाग लेता है वह शारीरिक, बौद्धिक, मानसिक, भावनात्मक एवं आध्यात्मिक विकास को प्राप्त होता है।

- अशोक सियोल

99829 03770